Vol. 2, No. 2 (April 2013) P 1-3

Sangeet Galaxy
ISSN: 2319-9695

शाश्वत् संगीत का प्रतीक है : वाद्य संगीत

दीपक त्रिपाठी
शोधार्थी
मंच एवं कला संकाय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी
Email: deep.naadbramha333@gmail.com

"गायन, वादन तथा नृत्यं त्रयं संगीत मुच्यते" यह तो सर्वविदित है कि संगीत गायन, वादन तथा नृत्य से बनता है किन्तु जब बात शाश्वत् संगीत की है तो शाश्वत् तत्वों से युक्त संगीत को ही व्यक्त करना पड़ेगा। शाश्वत् का अर्थ है निरन्तर रहने वाला। इस सृष्टि का आधार तत्व नाद है, जो आदि से अन्त तक स्थिर है। शब्द, काल, वाक् इन तीनों विशेषणों को नाद अपने में समाहित रखता है। नाद का वाचिक तत्व वाक् है। प्रकृति अपनी गति से चलायमान है जो सांगीतिक भाषा में लय से उद्भासित है। लय का गुण भी शाश्वत् तत्व का प्रमाण है। अतः स्वर एवं लय सांगीतिक चिंतन के प्रामाणिक गुण हैं जो आध्यात्मिक दृष्टि से भी उपयुक्त एवं साध्य हैं ।

मानव संस्कृति का जब उद्गम हुआ तो वह सांसारिकता, सामाजिकता एवं व्यवहारिकता आदि सभी सांस्कृतिक लक्ष्य–लक्षणों से अनभिज्ञ थी। सर्वप्रथम उसने अपने भाव व्यक्त करने के लिए अंग संचालन का सहारा लिया। जिसका विकासात्मक रूप आज नाट्य, नृत्य, नाच आदि शैलियाँ हैं। अपनी उत्कण्ठा के माध्यम से नाद के महत्व को समझा एवं जिज्ञासु प्रवृत्ति की निरन्तर प्रवाहमयता के फलस्वरूप वाणी का विकास हुआ। वर्णाक्षरों से शब्द, शब्द से वाक्य तथा वाक्यों से भाषा का निर्धारण हुआ, जो कि गायन का मुख्य भाग है ।

"गाँधर्वमितितज्ज्ञेयं स्वरतालपदात्मकम्।" भावों की अभिव्यक्ति शब्दों के माध्यम से स्वर का सहारा पाकर मुखरित हो जाती है । अगर हम लौकिक रूप से देखें तो पाते हैं कि शिशु में सबसे पहले अंग संचालन, तत्पश्चात् वाणी विकास की प्रक्रिया होती है। औसतन् हम देखें तो नृत्य के गुण मनुष्य में अधिक, उसके बाद गायन के परन्तु वाद्य संगीत का गुण बहुत कम लोगों में होता है। मानव सभ्यता में इसकी यही न्यूनता इसे विशेष बनाती है। गायन स्वर, भाषा, ताल एवं पद के द्वारा किया जाता है तथा नृत्य आंगिक क्रियाओं के माध्यम से भावों की अभिव्यक्ति है, किन्तु वादन स्वर एवं लय के द्वारा ही होता है, जो कि शाश्वत् संगीत के मूल तत्व है।

वाद्य संगीत पूर्णतया नादमय है। नादमय का तात्पर्य स्वर ही से नही अपितु स्वर एवं लय दोनों से है क्योंकि नाद में स्वर गुंजित है और वह गुंजायमान ध्वनि लय से आवरणित / आच्छादित है। कम्प–विस्तार, आन्दोलन–संख्या, आवृत्ति आदि स्वरों में लय का ही रूप है अर्थात्

नादमय ध्वनि स्वर एवं लय का पारलौकिक विषय है। जिसका ज्ञान विषयी को उत्प्रेरक शक्ति भी प्रदान करता है। इस संगीत के अलग – अलग स्वरों में भी पूर्णता का अंश है। पूर्णता, अपूर्णता मे प्रकट होती है। इस संगीत के स्वर हमारे हृदय को मखमली छुअन का एहसास देते हैं। जिससे विश्वहृदय का उदय होता है। यह संगीत विश्व के सौंदर्य की वाणी है।

शिवसूत्र में नाद–ब्रह्म का उल्लेख है। शिवसूत्र कहता है, तार वाले वाद्यों की ध्वनि को सूनो। स्वरों का मेरूदण्ड पकड़ो। संगीत की भी रीढ़ होती है। स्वरों का भी मेरूदण्ड होता है। यह रीढ़ है– संगीत का केन्द्रीय स्वर जिसके चारो ओर अन्य स्वर घूमते हैं। शिवसूत्र के अनुसार अन्य स्वर आते–जाते रहते है, लेकिन केंद्रीय स्वर सतत् प्रवाहमान रहता है। ये कभी नही रुकता। कभी नही ठहरता। जो इस स्वर को पकड़ लेता है। वह नाद हो जाता है। ब्रह्म आनंद जानने वाला ब्रह्म हो जाता है। यह तकनीकी नही अभ्यास है। साधना है। ध्यान जैसी एकनिष्ठ साधना। पाइथागोरस ने भी कहा है– "संगीत आत्मा की उन्नति का सबसे अच्छा साधन है।"

लय योग कहता है, संगीत में खो जाने का अर्थ है– खुद खो जाना और खोने पर विवश कर देना। सच्चा संगीत वही है, जो आत्मा तक पहुँचे। जिसमें संगीतकार पीछे छूट जाये। खुद गीत हो जाएं। वाद्य हो जाए। नृत्य बन जाए।

"शाश्वत्" शब्द सच्चिदानंदघन परमात्मा का गुण है, जो अनादि–अनंत है, चिरचिरंतन तक व्याप्त है। समय चक्र के संलयन एवं विलयन किसी भी परिस्थिति में वह संस्थित है। वह एक ऐसी परिधि है जिसका घूर्णन नियत् अक्षाँशी है। अतः कहने का तात्पर्य यह है कि जो निरन्तर अपने रूप में स्थिर है, पूर्ण विकसित है वही शाश्वत् है। जिसमें विस्तार की विलक्षण शक्तियाँ हैं।

"ऊँ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।" जो सर्वदा पूर्ण है, शाश्वत् है ऐसे सम्पूर्ण पूर्णता वाले तत्व को परमात्मा कहा जाता है।

वाद्य संगीत को शाश्वत् संगीत का प्रतीक मानना सर्वोचित है, क्योंकि इस संगीत का जो माध्यम है वह सबसे सूक्ष्म है स्वर एवं लय। ये दोनों तत्व पूर्ण हैं जो आदि से अनंत तक निरन्तर गतिशील और नियत् रहने वाले है। पृथ्वी की जड़–चेतन अवस्था में भी यही तत्व क्रियाशील रहे हैं और रहेंगे। यही सृष्टि के संतुलित आधार हैं जिनसे काल–गणना, ज्ञान–परिधि, वाणी–विकास एवं सृष्टि–चिन्तन आदि तत्वों का परिमाण स्वतः परिभासित होता है। एक दृष्टि से हम देखें तो जो हमारी परम शक्ति एवं शक्तियाँ हैं वे भी किसी न किसी वाद्य को धारण किये हुए हैं। माँ सरस्वती वीणा धारण किये हुए हैं तो भगवान श्री गणेश मृदंग वादन करते हैं जो कि संगीत के आदि गुरू भी कहे जाते हैं। भगवान श्री कृष्ण मुरली, तो शंकर डमरू बजाते हैं। संगीत के प्रमुख प्रेरणा स्रोत भी यही हैं। क्या ये गा नही सकते थे भगवान शंकर का तो एक रूप नटराज भी है, किन्तु इनके डमरू वादन से पाणिनी ने

सूत्रों की रचना कर डाली। इनसे प्रेरणा पाकर संगीत की विभिन्न शैलियों का प्रचार–प्रसार ऋषि–मुनियों ने किया। नारद ऋषि जो करताल बजाकर हर समय ब्रह्मण्ड में हरिनाम संकीर्तन करते रहते हैं। पृथ्वीलोक में जब गायन, वादन तथा नृत्य आविर्भूत हुए तो स्वर एवं लय का जन्म तो स्वतः हुआ क्योंकि यह शाश्वत् गुण तो संगीत की तीनों ही शैलियों में व्याप्त हैं, किन्तु वाद्य संगीत के तो ये आधार तत्व है। अवनद्ध पर पड़ने वाले आघातों से मानव मन की क्रियाशीलता स्वतः बढ़ जाती है। बाँसुरी की तान सुनकर तो गोपियाँ बरबस ही खिची आती है। क्यूँ न आये हमारी मानवीय संवेदनाओं का यही गुण है जहाँ कोई सरस नाद हमारे अन्तर्नाद से टकराया कि शरीर का रोम–रोम रोमाँच से भर जाता है और हृदय अपने आप ही आकर्षित होता चला जाता है। मनुष्य की यह स्थिति शाश्वतीकरण का प्रमाण है। शारीरिक एवं मानसिक चेतना शून्यावस्था को प्राप्त हो जाती है। जहाँ आनंद की आकाशगंगा में अनंत तारामंडल की सौन्दर्यता रसीभूत होकर सुखानुभूति का आस्वाद् प्रदान करती है। ऐसी दिव्य एवं परमअनुभूतियों का ही प्रयोग आज संगीत–चिकित्सा के क्षेत्र में बहुतायत से प्रयोग किया जा रहा है और उसके समुचित लाभ भी प्राप्त हो रहे है। शोधकर्ताओं ने यह भी कहा है कि यदि आप कोई वाद्य बजाते हैं तो इससे मस्तिष्क के निचले हिस्से ब्रेनस्टेम पर सकारात्मक असर पड़ता है। ब्रेनस्टेम से ही साँस लेने की प्रक्रिया और हृदय की धड़कन नियंत्रित होती है।

अतः वाद्य संगीत ही मानव–जीवन को नवचेतना देकर मनुष्य के मन–मस्तिष्क को आनंदित कर उस शाश्वतीय ब्रह्म की अनुभूति प्रदान कराता है।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

1–संगीत पत्रिका

2–अहा! जिन्दगी पत्रिका

3–आचार्य शर्मा श्री राम शब्दब्रह्म–नादब्रह्म

———————————————